InternationalJournalofHumanitiesandSocialScienceInvention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 9 Issue 3 Ser. I ||Mar, 2020 || PP 72-74

कथाकार अमरकान्त : भाषा और रचनात्मकता

डॉ. चन्द्रशेखर रावल
ऐसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
सेठ फूलचन्द बागला (पी.जी.) कॉलेज, हाथरस।

शिल्प के मुख्य तत्त्वों में भाषा का स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्णहोता है, क्योंकि शिल्प के सभी तत्व भाषा द्वारा ही आकार पाते हैं। इसलिए रचना की मूलसंवेदना का वहन भाषा ही करती है। स्वातंत्र्योत्तर भारत के जीवन की बदली हुई परिस्थितियों की मूल संवेदना के अनुकूल ही नई कहानी की भाषा है। इस संक्रमण काल में व्यक्ति, परिवार, समाज आदि सभी के रूपों में परिवर्तन आया, इसके साथ ही मूल्यों का विघटन हुआ और आपसी सम्बन्धों एवं आदर्शों में भी बदलाव आया। नई कहानी ने अपनी भाषा को यहीं से उठाया है। यही कारण है कि नई कहानी की भाषा अपनी पूर्ववर्ती कहानी की तरह कथाकारों के विचार की संवाहिका न होकर परिवर्तित चेतना के नवीन अर्थ–संप्रेषण से युक्त है। आरम्भ में नई कहानी की भाषा पूर्ववर्ती कहानी के संस्कारों से प्रभावित अवश्य थी किन्तु धीरे–धीरे इसमें परिवर्तन आता गया। राजेन्द्र यादव के शब्दों में– "प्रारम्भ में चूँकि नयों के ऊपर भी कहीं पुराने संस्कारों की सिमटती छाया थी ही, इसीलिए नई कहानी झटके से अलग नहीं हुई।"[1]

नई कहानी की भाषा उत्तरोत्तर परिष्कृत होती गयी और उसने साहित्य और जीवन की भाषा के अन्तर को बहुत सीमा तक मिटा दिया। ऐसा इसलिए हो सका क्योंकि नये कहानीकार ने बदली हुई परिस्थिति को व्यापक रूप से देखा और अभिव्यक्त किया। श्रीराम तिवारी ने सत्य ही लिखा है– "नई कहानी की भाषा 'अंडर–स्टेटमेंट' की भाषा है, जो 'इमिटेशन' से नहीं बनती, पूरे 'सिचुएशन' को एक साथ देखने से बनती है।"[2]नई कहानी की भाषा वस्तुतः यथार्थ की भाषा है जो कृत्रिमता और अलंकरण सेबहुत दूर है। वह कथ्य की तरह ही विविधतापूर्ण है तथा पंजाबी, मराठी, बंगला, उर्दू और अंग्रेजी इत्यादि भाषाओं की शब्द–सम्पदा को आत्मसात् करते हुए विकसित होती है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि नई कहानी की भाषा, परिवेश या वातावरण, पात्र या चरित्र तथा स्थिति से उद्भूत है और संदर्भजनित भावों व अनुभूति को प्रभावशाली ढंग से रूपायित करती है। इसने भाषा की अभिधा शक्ति को अभूतपूर्व ढंग से विकसित किया है। जिस तरह कहानी का परिवेश है, उसके पात्रों की भाषा भी उसी के अनुकूल होकर नई कहानियों में आती है। मोहन राकेश व राजेन्द्र यादव की अधिकांश कहानियों में शहरी परिवेश है, कमलेश्वर के यहाँ महानगर और कस्बे दोनों हैं, फणीश्वरनाथ 'रेणु' व शिवप्रसाद सिंह की कहानियों में आँचलिक परिवेश है और निर्मल वर्मा विदेशी परिवेश को अपनी कहानियों का आधार बनाते हैं। इस प्रकार विभिन्न परिवेशों के चित्रण का प्रभाव कहानी की भाषा पर भी पड़ा है। इसीलिए नई कहानी की भाषा कहीं एकदम सपाट है, कहीं काव्यात्मक तो कहीं एकदम भदेस और देहाती।

अमरकान्त की भाषा सादगी से पूर्ण होते हुए भी विशिष्ट है। उनकी भाषा में तत्सम, तद्भव, देशज शब्दों के साथ–साथ अरबी, फारसी और अंग्रेजी के प्रचलित शब्द भी आते हैं, किन्तु इनके प्रयोग से कहानी में सजीवता आती है, वह दुरूह नहीं होती। शब्द प्रयोग की दृष्टि से अमरकान्त को तत्सम प्रधान लेखक कहा जा सकता है, क्यों कि अन्य कहानीकारों ने तत्सम शब्दों का प्रयोग बहुत कम मात्रा में किया है। अमरकान्त ने अपरिचित शब्दों का प्रयोग बहुत कम किया है और जहाँ किया भी है तो उसकी व्याख्याभी उन्होंने साथ में दे दी है, जैसे–'ज़िन्दगी और जोंक' का रजुआ मार पड़ने पर चिल्लाने लगता है–"मैं बरई हूँ, बरई हूँ, बरई हूँ ..... स्पष्ट था कि इतने लोगों को देखकर वह काफी भयभीत हो गया था और अपने समर्थन में कुछ न पाकर बेतहाशा अपनी जाति का नाम ले रहा था, जैसे हर जाति के लोग चोर हो सकते हैं, लेकिन बरई कतई नहीं हो सकते।"[3]

नई कहानी में फणीश्वरनाथ 'रेणु' ने सर्वाधिक ध्वन्यात्मक शब्दों का प्रयोग किया है। अमरकान्त भी ध्वन्यात्मक शब्दों का प्रयोग 'रेणु' की तुलना में कम नहीं करते। वे भी रोजमर्रा की साधारण ध्वनियों को अपनी कहानी में प्रयोग करते हैं, जैसे– चापुड़–चापुड़ खाना, हकर–हकर पानी पीना, खर–खर खाँसना तथा हहर–हहर नहाना इत्यादि। अमरकान्त निरर्थक शब्द प्रयोग जैसे– अटरम–सटरम, खटर–पटर, ओना–कोना व साथ–संगति इत्यादि द्वारा भी

आत्मीयता की सृष्टि करते हैं। मुहावरे और लोकोक्तियों का प्रयोग भी अमरकान्त के यहाँ अधिक मिलता है। वस्तुतः इन सबके प्रयोग से ही अमरकान्त की भाषा अधिक प्रवाहयुक्त, सशक्त और प्रामाणिक हो सकी है तथा उसमें तीव्र व्यंग्यात्मक क्षमता आ सकी है। अमरकान्त की कहानियों की भाषा में उस कलात्मकता का अभाव मिलता है जो नई कहानी की विशिष्ट प्रवृत्ति मानी जाती है। इस सम्बन्ध में मधुरेश का यह कथन उद्धरणीय है–''भाषा का ऊपरी तौर पर बेहद रूखड़ मगर अन्दर से बहुत सचेत उपयोग व्यंग्य की प्रच्छन्न अंतर्धारा और कहानी के कथ्य की गरिमा का प्रभामंडल तोड़ने की उनकी साहसिक कोशिश परवर्ती कहानी में संरचनागत परिवर्तन का आभास देते हैं। इसमें एक ओर यदि कहानी को स्थूल ब्यौरों और इतिवृत्तात्मकता से बचाव का स्पष्ट उपक्रम है, तो दूसरी ओर नई कहानी में काव्य के उपकरणों की अतिशयता के विरोध को भी लक्षित किया जा सकता है।''[4]

अमरकान्त के लेखन में हमें सघन रचनात्मकता का गुण दिखाई पड़ता है। अमरकान्त ने जिस तरह अपने आस–पास के जीवन को देखा, उसके छोटे–से–छोटे ब्यौरे को पकड़कर ऐसा रचनात्मक प्रयोग किया कि उनकी कहानियों में प्रभावोत्पादकता अपनी अतिरिक्त शक्ति के साथ प्रकट हो गई है। उपेन्द्रनाथ 'अश्क' के शब्दों में ''जो लोग उनकी कहानियों में सघन रचनात्मकता नहीं देख पाते, मैं समझता हूँ उन्हें इन शब्दों के अर्थ नहीं मालूम। अमरकान्त के कुछ समकालीन, जैसे मार्कण्डेय या यादव अथवा उनके बाद आने वाले दूधनाथ सिंह, जिस चीज को सघन रचनात्मकता कहते हैं, वह सायास दिमागी चिल्लाकशी के सिवा कुछ नहीं। अमरकान्त उन लोगों की तरह दूर की कौड़ी लाने अथवा किसी अजीब थीम अथवा पात्र को गढ़ने में श्रम और साधना नहीं करते। अपने परिवेश से जिन पात्रों को वे लेते हैं उनके चरित्र–चित्रण में अमरकान्त अपनी सामग्री का इतने कौशल से प्रयोग करते हैं कि लगता ही नहीं, कहीं आयास–प्रयास है, लेकिन शिल्प की सघनता ऐसी है कि दो वाक्य भी कहीं नहीं कटते।''[5]

अमरकान्त की रचनात्मकता अन्य नये कहानीकारों से अपनी सहजता, सरलता और व्यंग्य क्षमता के कारण अलग दिखाई देती है। वे लेखकीय स्वतन्त्रता के नाम पर कोरी कल्पनाओं के द्वाराअपनी कहानियों में कलात्मकता उत्पन्न नहीं करते बल्कि जीवन की सच्चाई को सहज भाव से प्रकट करते हैं। इस सम्बन्ध में यदुनाथ सिंह ने ठीक ही लिखा है– "जो विसंगतियाँ, अन्तर्विरोध उन्होंने देख महसूस किये हैं उन्हें अपनी कहानियों की घटनाओं, स्थितियों, पात्रों में मूर्त करके वास्तविकता को परिभाषित किया है। न ही उन्होंने स्थितियों को सुविधानुसार काटकर प्रस्तुत किया है और न उनको कोई नया रंग रूप देकर विशिष्ट बनाया है। अपने समकालीनों से और विशेष रूप से आन्दोलन धर्मा कहानीकारों से इस मायने में भी अलग रहे हैं कि जहाँ उनके अधिकांश समकालीन कहानीकार अपने लेखकीय स्वातंत्र्य और वैशिष्ट्य के आग्रह में अपनी कहानियों में विशिष्ट कलात्मक रचाव और असंतोष, विद्रोह आदि की अवास्तविक ऊष्मा भरने की कोशिश करते रहे, एक अत्यन्त मर्यादित क्षोभ और कारुणिकता, असहमति और अस्वीकार के तेवर पैदा करते रहे वहीं उन तमाम सच्चाइयों को बरका देते रहे हैं जो सामाजिक जीवन को विपिन्न विकृत बनाती जा रही थीं। इसके विपरीत अमरकान्त एक सम्पन्न ऐतिहासिक दृष्टि से अपने समय और परिवेश को उसकी वास्तविकताओं के माध्यम से मूर्त और परिभाषित करते रहे हैं।''[6]

अमरकान्त नई कहानी की रचनात्मकता अथवा उसकी प्रवृत्तियों से यथासम्भव अलग रहकर अपने समय और स्थिति को सहज रूप में अभिव्यक्ति तो अवश्य दे रहे थे; किन्तु ऐसा नहीं है कि उन पर नई कहानी आन्दोलन का प्रभाव न पड़ा हो। अमरकान्त की 'डिप्टी कलक्टरी' तथा 'सवा रुपये' नामक कहानियों पर यह प्रभाव आलोचकों ने स्वीकारा है। 'डिप्टी कलक्टरी' के सम्बन्ध मेंमधुरेश ने लिखा है–''डिप्टी कलक्टरी ही एक मात्र ऐसी कहानी है जिसे अपने युग के इस रोमांटिक प्रभाव से बचा न पाने का उदाहरण माना जा सकता है। 'डिप्टी कलक्टरी' की उस भोली और आवेग तरल प्रतीक्षा में ही यह रोमानी भाव दिखाई देता है और यह भोली प्रतीक्षा, जैसा कि बहुतों ने संकेत किया है, एक तरह से उस समय की कहानी का मूल स्वर ही था।''[7]

'डिप्टी कलक्टरी' के भावबोध को भले ही मथुरेश रोमांटिक मानते हों किन्तु इस कहानी में जीवन का जो गहरा पीड़ाबोध है, वह हर तरह की तीव्र रोमांटिक भावनाओं से सर्वदा अलग है। यही कारण है कि अमरकान्त की रचनात्मकता का प्रभाव उनके सहवर्ती और बाद के कहानीकारों पर पड़ा। मधुरेश के ही शब्दों में"सामाजिक विसंगतियों, छद्म और अन्तर्विरोधों के उद्घाटन के साथ ही साधनहीन और विपन्न आदमी के शोषण एवं विरोध की लड़ाई में उसके साथ और उसकी लड़ाई लड़ने वाले जुझारू चेतना से लैस कहानीकारों की जो एक लम्बी परम्परा आज हिन्दी में दिखाई देती है, कहीं न कहीं वे सब अपने को अमरकान्त से जुड़ता हुआ महसूस करते हैं। नामों का अलग–अलग न तो कोई विशेष

महत्त्व ही है और न ही वे इतने कम हैं कि उन्हें बहुत आसानी से गिना जा सके।''[8] वस्तुतः अपनी निजी विशेषताओं के कारण ही अमरकान्त नई कहानी आन्दोलन के प्रभावों से काफी दूर रहे और अपनी रचनात्मक क्षमता द्वारा साहित्य–जगत् में अपना विशिष्ट स्थान बनाया।

संदर्भ :

1. कहानी : स्वरूप और संवेदना, पृष्ठ संख्या–55
2. नई कहानी : संदर्भ और प्रकृति, पृष्ठ संख्या–154
3. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ (खण्ड–1), पृष्ठ संख्या–55
4. हिन्दी कहानी का विकास, पृष्ठ संख्या–171
5. वर्ष–1 : अमरकान्त, पृष्ठ संख्या–286
6. वही, पृष्ठ संख्या–239
7. वही, पृष्ठ संख्या–154
8. वही, पृष्ठ संख्या–164